णमोकार मंत्र – महामंत्र

(मोन – साधना मंत्र)

श्री पंच परमेष्ठि ध्यान

संकलन
लेखन एवं प्रकाशन
मोहनलाल बोल्या

माँ पद्मावती

प्रकाशक :
मोहनलाल बोल्या
सर्वाधिकार सुरक्षित
लेखक के अधीन

प्रकाशकीय संस्करण – 2010

मूल्य : 50/– रू.

मुद्रक : नाकोडा कम्प्यूटर्स,
33, विनायक कॉम्पलेक्स 'B',
दुर्गा नर्सरी रोड, उदयपुर (राज.)
मो. : 093525 20321

प्राप्ति स्थान :
मे. धुप्या ज्वेलर्स,
16, बडा बाजार, उदयपुर (राज.)
फोन : 0294 – 2522513
मो. : 094141 64357

णमोकार मंत्र - महामंत्र

(मोन - साधना मंत्र)

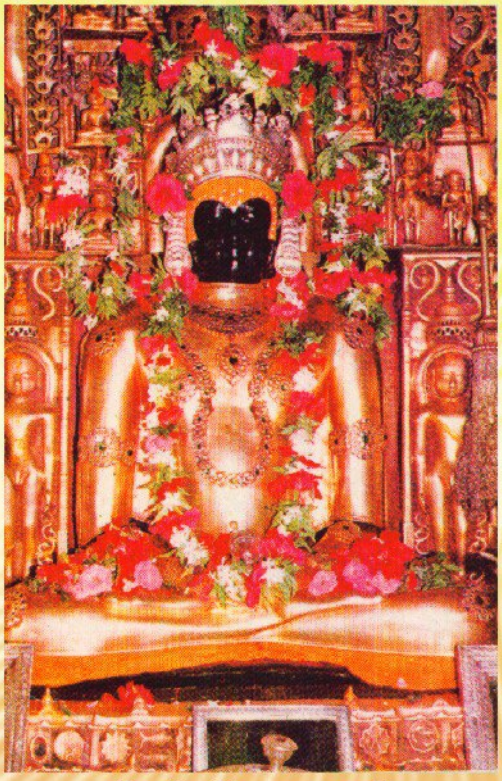

श्री केसरियानाथ जी

ॐ ह्रीं श्रीं श्री आदिनाथ नमो नमः

संकलन, लेखन एवं प्रकाशन

मोहनलाल बोल्या

37, शांति निकेतन कॉलोनी, बेदला–बड़गाँव लिंक रोड

उदयपुर – 313011 (राज.)

दूरभाष : 0294–2450253

मोबाईल : 94613 84906

णमोकार मंत्र - महामंत्र

श्री सर्व मंत्र शिरोमणी श्री नवकार

प्रेरणा : श्री हेमदर्शन विजय जी म.सा.

सौजन्य : श्री जैन श्वेताम्बर महासभा, उदयपुर

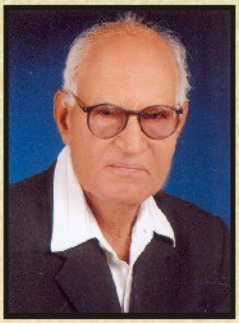

सम्पादकीय --

जैन धर्म का प्रादुर्भाव का समय निश्चित नहीं है, अनादिकाल माना गया है, उसी प्रकार नवकार मंत्र भी अनादिकाल से है । भद्रबाहू स्वामी ने अवश्य विस्तार किया। यह मंत्र ही महा मंत्र है।

नवकार महा मंत्र से सभी कार्य सफल होतें है, यह एक साधना मंत्र है। जिसका विधि विधान का विस्तृत रूप से वर्णन प्रस्तुत किया गया है। पाठक गण द्वारा इस पर मनन करना चाहिये।

भगवान महावीर निर्वाण के बाद भिन्न – भिन्न समय में (लेखक के विचार) 12 वर्ष का दुष्काल पड़ा। जिससे अधिकांश साहित्य विस्मृत हो गया अर्थात् बिखर गया उसको महान आचार्यों ने सामूहिक रूप से प्रयत्न करके एकत्रित किया और जो उपलब्ध न हुआ उसको चर्तुदश व दशपूर्वधर ज्ञानी से श्रवण कर लिपिबद्ध कर जैन साहित्य को बनाए रखा।

छठी शताब्दी में धर्म विरोधियों ने दुष्टता वश जैन साहित्य को नष्ट कर दिया, भारत में अधिकांश जैन साहित्य नष्ट हो गया। यदि कोई ग्रन्थ उपलब्ध हैं तो आठवीं शताब्दी या इसके बाद के मिलते हैं।

जिन शासन के आचार्यों ने भी साहित्य–सृजन में कमी कमी नहीं की, उन्होंने गृहस्थ लोगों को इतना उपदेश देकर अम्बार लगा दिया और श्रावक लोगों ने अपने धन का सद् उपयोग कर उन मुनियों के उपदेशों को ग्रंथ के रूप में तैयार करा फिर से व्यवस्थित रूप में आगम साहित्य, मंदिर बनवाकर जैन संस्कृति को जीवित रखने में सहयोग किया।

बचा हुआ साहित्य भी इतना अधिक था, उसको मध्यकालिक विधर्मियों ने अधिकतर जला दिये एवं खाना बनाने के लिए उसका उपयोग किया उसमें से जो बचा, वह विदेशी लोग अपने साथ ले गए। विदेशों में हमारे साहित्य कितने व कहाँ है उससे पाठकगण आश्चर्य चकित रह जाएंगे।

मैं उन पूर्वाचार्यों, मुनि भगवंतों के प्रति नतमस्तक हूँ जिन्होंने इतिहास के झरोखे में देखा, खोजा और वास्तविकता का परिचय कराया जिन्होंने विदेशी विद्वानों को भी जैन सम्मेलन आयोजित कर आंमत्रित किया और जैन दर्शन की जानकारी दी और प्रमाणित किया कि जैन दर्शन ही प्राचीन है और विदेशी विद्वानों ने भी इसको स्वीकार किया तथा जगह–जगह पर यही विचार प्रगट किये जो साहित्य में लिपिबद्ध किये।

वर्तमान में संकलन के रूप में खम्मात, कोबा, बीकानेर, मुम्बई, पाटण, पालीताणा,जैसलमेर आदि स्थानों में पुरातत्व सामग्री व विशाल ज्ञान भण्डार स्थापित है, जहाँ पर बैठकर शोधार्थी अपना शोध कार्य में सहयोग प्राप्त कर सकता है।

इसके साथ – साथ में वर्तमान में भी आचार्य भगवंत प्रवचनकार रचनाकार है जो अपने प्रवचनों को ही पुस्तक के रूप में प्रकाशित करवाते हैं और यदि कोई साहित्य रचते हैं तो भी अपने गुरू–परम्परा तक सीमित रखकर साहित्य रचते है। इतिहास के आधार पर शोध कार्य नहीं किया और किया भी है तो उनकी संख्या न्यूनतम ही है।

हाँ मैं उनके प्रति भी नतमस्तक हूँ , जिन साधु भगवंतो ने आगम जैसे साहित्य को हिन्दी में समझाने का प्रयास किया व आगमों का हिन्दीकरण शास्त्र निषिद्ध है, हाँ शास्त्र के (आगमों के) साराशं दिया जा सकता है, जिसके लिए आचार्यों ने यह किया भी है। जिससे जैन श्रावक जैन दर्शन को समझ सके।

प्राचीन परम्परा व शास्त्रानुसार श्रावकगण को आगम का अध्ययन व पठन वर्जित है लेकिन परम्परा को त्याग कर शास्त्र का संक्षिप्तीकरण कर श्रावक को जानकारी देनी चाहिये। मेरे इस ग्रन्थ में जो सामग्री प्राप्त हुई है वह करीब 4000 वर्ष प्राचीन है लेकिन जैन दर्शन अनादिकाल से प्रचलित है इसके लिए विस्तृत शोध की आवश्यकता है। शोधकर्ता इस कार्य को आगे बढ़ाएगें।

(मोहनलाल बोल्या)